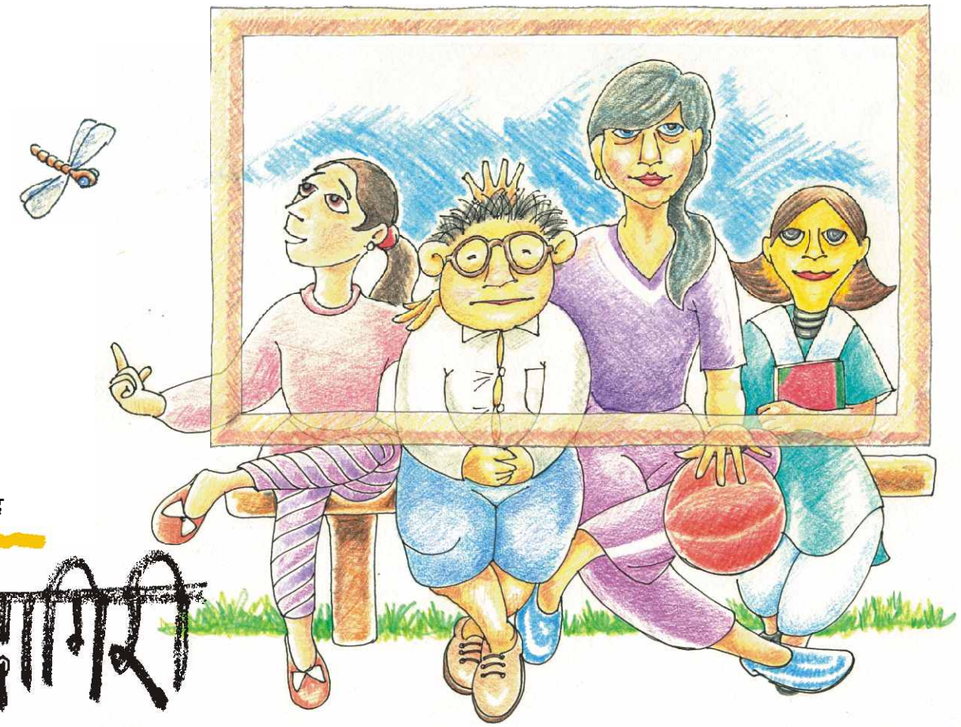

पारो आनन्द

दादागिरी

मुझे नहीं मालूम कि ऐसा मेरे साथ ही क्यों होता है! क्यों हर बार मैं ही निशाने पे होता हूँ! मुझे यह भी नहीं पता कि ऐसा होना कब शुरू हुआ। और क्यों? क्यों हर बार मुझे ही इसकी कीमत चुकानी पड़ी? कैसी कीमत? अरे किसी भी तरह की कीमत। पैसों से चुकाओ या जान देकर चुकाओ! मैंने हर तरह से कीमत चुकाई है। शायद मेरा हुलिया ही कुछ अजीबो-गरीब-सा है। आँखों पर मोटा-सा चश्मा। एकदम खड़े बाल, साही जैसे। छोटी-सी निकर जिसमें से मेरी जाँघें किसी गुब्बारे की तरह फूली हुई नज़र आती हैं।

मैं क्लास में फर्स्ट आता हूँ। टॉपर से तो सभी नफरत करते हैं। औसत दर्जे के छात्र इसलिए चिढ़ते हैं क्योंकि वे उसे अपनी बिरादरी का नहीं समझते। और पढ़ाई में पप्पुओं के लिए आपसे नफरत करने के हज़ार कारण हैं। अक्सर वे अक्खड़ और दादा किस्म के होते हैं। उनका तो कायदा ही कहता है कि दूसरे पाले के लड़कों से जमकर नफरत करो। आप जो हैं वह होने से ही नफरत है उन्हें। आप समझ रहे हैं ना, मैं क्या कहना चाह रहा हूँ? क्लास क्या मेरी बहनें तक मुझसे नफरत करती हैं।

चलो, ऐसा करते हैं कि शुरू से ही शुरू करते हैं।

मैं अपने मम्मी-पापा का बदकिस्मत चौथा बच्चा हूँ। बदकिस्मत इसलिए कि तीन लड़कियों के बाद पैदा हुआ। बड़ी चाह थी उन्हें एक लड़के की। पर, क्या बताऊँ कि कितनी नफरत की जाती है मुझसे – जितना मुझे लगता है उससे कहीं ज़्यादा। खैर, मेरी बहनों के बारे में जानना चाहोगे?

बहन नम्बर एक – रीना। बहुत लम्बी। जटाओं जैसे बाल लेकिन कपड़ों का कोई सलीका नहीं। हालाँकि वह खुद को किसी डिज़ाइनर से कम नहीं समझती। पढ़ने में ठीक-ठाक है। हाँ, बास्केटबॉल की बढ़िया खिलाड़ी है। पर, उसे स्कूल से बाहर खेलने की इजाज़त नहीं है। मम्मी नहीं चाहती कि वह छोटी स्कर्ट पहनकर खेले। इसीलिए वह हमेशा नाराज़ रहती है। आपको भी अच्छा नहीं लगा न? मुझे भी नहीं लगता।

बहन नम्बर दो – नीना। दुबली-पतली। एक हज़ार वॉट के बल्ब जैसी तेज़, होशियार। घर में हम दो ही ऐसे हैं जो वाकई पढ़ाई करते हैं – हमेशा। अन्तर केवल इतना है कि मुझ पर खूब ध्यान दिया जाता है, "बेटा, बादाम खा लो जैसे।" नीना को इससे फर्क नहीं पड़ता है। अगर मेरे साथ ऐसा होता तो भई मुझे तो अच्छा नहीं लगता।

बहन नम्बर तीन – जब वह दुनिया में आई थी तो सबके मुँह से यही आह निकली थी – ओ हो, फिर से लड़की। वह सनकी है। सपने देखती रहती है। खाने-पीने में बिलकुल ध्यान नहीं है उसका। चलती है तो लगता है कोई कंकाल चला जा रहा है। पता नहीं, जानवरों को लेकर वह क्यों इतनी दीवानी है। आए दिन गली के आवारा कुत्तों को घर ले आती है। कभी सड़क पर घायल पड़ी चिड़िया या गिलहरी को ही उठा लाती है। मम्मी-पापा को उसकी इन हरकतों से बेहद चिढ़ मचती है। पर उसको कोई फर्क नहीं पड़ता है। वह जानवरों की डॉक्टर बनना चाहती है, लेकिन विज्ञान में फिसड्डी है। पता नहीं, डॉक्टर कैसे बन पाएगी। सही पहचाना आपने – यह है बीना।

अगर चौथी भी लड़की होती तो? क्या नाम रखते उसका? वीना, सीमा,... ईना... नहीं, नहीं यह तो बढ़िया नाम है। तो मेरा नाम विक्रान्त कैसे पड़ा? मोटा, बदसूरत और भयानक रूप से समझदार। देसी घी और लड्डू पर पले सुअर जैसा। और खुदा ना खास्ता अगर मैं चौथी अनचाही लड़की होता तो पूरी तरह से नफरत के सिवा क्या पाता? आज मैं कुछ लोगों का तो बेहद दुलारा हूँ पर बाकियों के लिए नफरत का पुलिन्दा हूँ। वैसे इन बाकियों में बहुत लोग आते हैं।

अब सुअर खा-पीकर मोटा-तगड़ा हो चुका है। यानी समय आ गया है हलाली का। इसलिए मुझे स्कूल भेजा गया।

स्कूल में मैं हमेशा ही मज़ाक का पात्र बना रहता हूँ। तीन अजीब-सी बहनें और एक मोटा चिकना-चुपड़ा भाई – स्कूल में हम सबके लिए तमाशा-सा बने रहते हैं। बच्चे तो बच्चे कभी-कभी तो टीचर तक इसमें शामिल हो जाते हैं। मुझे लड्डू, मक्खन का लोंदा, माँ का लाल तक कहा जाता है। मैं जब शिकायत करता तो लोग कहते – क्या यार, तुम मज़ाक तक नहीं समझते। एक बार तो मैंने स्कूल बदलने की भी सोच ली थी। पर, पापा को समझा नहीं पाया कि मैं ऐसा क्यों करना चाहता हूँ। स्कूल में मेरे साथ और भी बहुत कुछ होता। जब मैं किसी सवाल का जवाब देने या सवाल पूछने के लिए उठता तो मेरी कुर्सी खिसका दी जाती। एक बार तो हद हो गई। मेरे बस्ते से छिपकली निकली। और यह सब मज़ाक था उनके लिए।

इन हरकतों से भी ज़्यादा दुख मुझे तब पहुँचता जब स्कूल में सब मुझसे कटते। जब टीचर हमें समूह बनाने को कहती तो मेरा जी काँप उठता। कोई मेरा साथ न चुनता। मैं अकेला रह जाता। टीचर भी इसे जान जाती। और, वह मुझ जैसे किसी और "छूटे हुए" को मेरे साथ कर देती। इसे मैं स्वीकार न कर पाता। नतीजा यह होता कि हमारा काम सबसे कमज़ोर होता। जबकि हम अच्छा, बहुत अच्छा कर सकते थे।

खैर, यह तो कुछ नहीं था। खराब वक्त तो आगे आने वाला था। मेरी माँ पिछले कुछ अर्से से बीमार रहने लगी थी। और बीमार क्यों न होती? मुझे पाने के लिए उन्हें कितने बच्चे जो पैदा करने पड़े थे! उनकी जाँच वगैरह पर काफी पैसा खर्च हो रहा था। अब तक ठूँस-ठूँसकर खिलाया गया दूध-घी मेरे शरीर से फूट-फूट पड़ रहा था। मेरी छोटी-सी निक्कर और कसती जा रही थी। शर्ट ऐसी हो चली थी कि हर दो बटनों के बीच से मेरा सफेद, चिकना सीना झाँकता रहता। कहते हैं मोटापा बुरी बला है। और गुण्डों, दादाओं की दुनिया में तो किसी अभागे के खिलाफ इस्तेमाल किया जाने वाला यह सबसे अचूक हथियार है। और मैं तो वैसे ही अभागा नम्बर 1 हूँ।

इसी दौरान एक और दुर्भाग्यपूर्ण घटना घट गई। मुझे आश्चर्यजनक रूप से स्कूल के "स्टूडेंट ऑफ द ईयर" अवॉर्ड के लिए चुना गया। यह बुरी बात कैसे हुई? यही सोच रहे हैं न आप? तो सुनें। इससे पहले चार साल से लगातार यह अवॉर्ड पार्थिव और पार्वती सेनगुप्ता के बीच बँटता आ रहा था। ज़ाहिर था वे इस घोषणा से बिलकुल खुश नहीं थे और न ही दूसरे छात्र। यहाँ तक कि मेरी बहनों को भी इससे कोई ज़्यादा फर्क नहीं पड़ा। हमारे घर में रीना को छोड़कर किसी को कोई अवॉर्ड मिलता ही न था। रीना को बास्केटबॉल में अवॉर्ड मिला था, लेकिन मम्मी-पापा के लिए वह कोई मायने नहीं रखता था। उनकी नज़र में यह समय की बर्बादी थी। अवॉर्ड वितरण का दिन पास आ रहा था। कोई रिटायर्ड जनरल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इसलिए मेरी टीचर, यहाँ तक कि प्रिंसिपल ने भी मुझे सलाह दी कि मैं कोई अच्छी-सी ढीली शर्ट पहनकर ही मंच पर इनाम लेने आऊँ। या फिर तुरन्त वज़न घटाने की कोई तरकीब निकालूँ।

चित्र : दिलीप चिंचालकर

मैं सीधे घर गया और मम्मी-पापा को यह बात बताई। मेरी तमाम कोशिशों के बावजूद मेरी बहनों द्वारा मेरे वज़न पर की गई छींटाकशी मम्मी ने सुन ही ली। वे चिल्लाईं, "चुप करो। समझ नहीं आता तुम्हें वो बढ़ता बच्चा है।" काश, मम्मी ने यह न कहा होता। क्योंकि मुझे मालूम था उनका जवाब – बढ़ता बच्चा है तो लम्बाई में बढ़े न, चौड़ाई में क्यों बढ़ रहा है? नई शर्ट पर पापा बोले, "पता नहीं, इनाम वितरण समारोह महीने के अन्त में क्यों रखे जाते हैं? ऊपर से दीवाली अभी-अभी गई है।" क्या किया जाए? इतने में मम्मी के दिमाग में एक बहुत ही पैसा बचाऊ पर खतरनाक आइडिया आया। उन्होंने कहा कि वे रीना की शर्ट की सिलाई उधेड़कर, उसे अच्छी तरह धोकर एकदम नई शर्ट बना देंगी। इसके लिए रीना की सबसे अच्छी शर्ट चुन भी ली गई। रीना ने विरोध किया कि उसे भी तो मंच पर इनाम लेने जाना है। लेकिन बेटे के "बड़े अवॉर्ड" के सामने भला उसके इनाम की क्या औकात थी!!

तो, रीना की शर्ट उधेड़ी गई। जो लोग नहीं जानते उनको बता दूँ कि लड़कियों के शरीर के आकार को देखते हुए उनकी शर्ट में आगे और पीछे सीवन डाली जाती हैं। पर, अब दिक्कत यह हुई कि सीवन खोलने से नीचे का कपड़ा ज़्यादा सफेद दिख रहा था। और सीने की जगह पर दो छोटे-छोटे उभार दिखने लगे थे।

मैं चिल्लाया, "मुझे यह शर्ट नहीं पहननी। नई शर्ट चाहिए।" बहनों ने कहा, "मुझे मम्मी-पापा के बारे में सोचना चाहिए।" और यह भी कहा कि मैं राई का पहाड़ बना रहा हूँ। मेरी ज़िद के आगे कोई नहीं झुका। उन्हें यह नहीं समझ आ रहा था कि पहाड़ तो मेरे सीने पर उभर रहे हैं! मेरी बहनें मुँह पर हाथ रखकर खी-खी करने लगीं। उन्होंने क्या-क्या कहा ... अब मैं क्या लिखूँ? आप खुद ही समझ लें।

और आखिर वह सुबह आ ही गई। मैंने वही शर्ट पहनी। मम्मी-पापा ने मेरा माथा चूमा। मैं खुद को हमेशा की तरह झूठी दिलासा दिए जा रहा था कि सब ठीक होगा।

यह मेरे पढ़ाई-भरे जीवन का एक बड़ा खास दिन होने वाला था। हमें गेट से घुसे अभी एक सैकेंड भी नहीं हुआ था कि बलराम, धीर, भट्ट मुझे देख ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। "अरे देखो रे देखो...। क्यों भाई, लगता है तुम्हें लड़के की तरह रहना पसन्द नहीं है। इसीलिए तो...।" दूसरा बोला, "शायद तुम्हारे घर में बेटियाँ कम पड़ रही हैं।" और सभी ठहाके लगाने लगे।

उनमें से एक ने चिल्लाकर कहा, "भाइयो और बहनो, आओ देखो, एक चमत्कार! अपनी आँखों से देखिए कि कैसे एक लड़का एक लड़की में बदल गया है।"

भीड़ जमा हो गई। मैं अपमान और शर्म से गड़ा जा रहा था। मैंने रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन मेरी आँखें डबडबा ही गईं। आँसू मुश्किल हालातों में लड़कों की आँखों से भी बहने लगते हैं। आँसू देखकर उन्हें चिढ़ाने का एक और मसाला मिल गया। "बू हू हू हू....छोटी-सी लड़की को लोना आ रहा है...बू हू हू हू।" मुझ पर तानों की बारिश हो रही थी। तानों के तूफान में मैं अकेला खड़ा था, निपट अकेला।

तभी हँसी-ठिठोली को चीरती एक तेज़ आवाज़ आई, "उसे अकेला छोड़ दो!" डबडबाई आँखों से मैंने देखा। मेरी बहन भीड़ को चीरती हुई आई और मेरे और उन गुण्डों के बीच दीवार बनकर खड़ी हो गई। फिर पीछे मुड़ी और ज़ोर से बोली, "सब पीछे हट जाओ।" रीना को इतने ज़ोरदार तरीके से बोलते हुए मैं पहली बार देख रहा था। इतने में बलराम मेरी ओर बढ़ते हुए बोला, "ओह हो, छुटके को नहीं नहीं... माफ करना ... छुटकी लड़की को अपनी रक्षा के लिए बहन का सहारा लेना पड़ा?" वह एक कदम और बढ़ा पाता, इससे पहले ही रीना ने उसकी बाँह पकड़ी और पीछे की ओर झटक दी। वह गिरते-गिरते बचा – मेरे ख्याल से झटके से कम आश्चर्य से ज़्यादा।

"मैंने कहा... पीछे हटो। इसे अकेले छोड़ दो।" और फिर तमाशा देख रहे बच्चों से बोली, "तुम्हें शर्म आनी चाहिए। क्या तुममें से किसी के पास इतनी हिम्मत नहीं कि उन्हें यूँ दादागिरी करने से रोक सको?"

वह गुस्से से काँप रही थी। मैं तो जैसे सुधबुध खो बैठा था। सुन्न-सा पड़ गया था इस राहत से कि यह गन्दा तमाशा आगे नहीं बढ़ा। सुन्न इस डर के कारण भी था कि यह आगे बढ़ सकता था। इतने में एक ने खुद को जायज़ ठहराने की मंशा से पूछा, "तुम्हारे मम्मी-पापा तुम्हारे भाई को एक शर्ट तक लाकर नहीं दे सकते? उसे तुम्हारी शर्ट तो नहीं पहननी पड़ती!" रीना

ने ठण्डी आवाज़ में कहा, "तुम ठीक कह रहे हो। हमारे घर के हालात अभी ऐसे नहीं हैं कि पापा मेरे भाई के लिए नई शर्ट खरीद लाते। हमें भी अच्छा नहीं लगा था, लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब हम दोनों बहुत खुश हैं। खुश इसलिए हैं क्योंकि अब हमें पता चल गया है कि तुम सब कितने मूर्ख हो। मेरे भाई ने जो अवॉर्ड जीता है, वह तुम सपने में भी नहीं जीत सकते। तुम्हें क्या लगता है इन ओछी, गन्दी हरकतों से तुम उसकी खुशी छीन सकते हो? तो सुन लो, कान खोल के। तुम हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। न हमारी खुशियाँ छीन सकते हो, न हमारी ज़िन्दगी में उथल-पुथल मचा सकते हो। हज़ार साल लग जाएँ तो भी तुम ...।"

फिर उसने मेरे कँधे पर हाथ रखा और मुस्कराते हुए बोली, "आओ चलें।" हम आगे बढ़ गए। भीड़ चुपचाप मुँह लटकाए खड़ी थी। घण्टी बजने से पहले ही हम स्कूल के हॉल में पहुँच चुके थे। रीना ने मेरे कँधे को हल्के से दबाया और चली गई। मैं उसे गले लगा सकता था – वहीं का वहीं। उसे भी शायद पता लग गया था। वह तुरन्त अपनी क्लास की लाइन में लग गई। मेरी क्लास के बच्चे भी इकट्ठा होने लगे थे। कुछ ने मुझसे "हैलो" कहा। कुछ ऐसे लोग जिनके लिए मेरा होना न होना बराबर था, ने इनाम मिलने पर मुझे बधाई दी।

उस दिन से आज दिन तक, मुझे कभी भी किसी ने नहीं धमकाया। चक मक

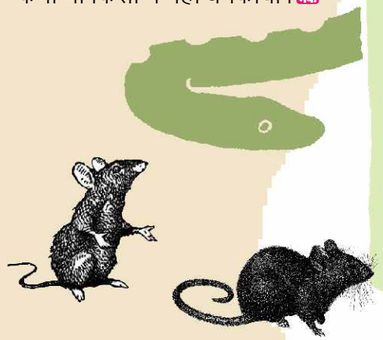

एक और बाँसुरीवाला

तुम्हें बाँसुरी वाले की कहानी याद है? कहानी कुछ यूँ है कि एक जनाब एक गाँव में यूँ ही मज़े में एक जोड़ा चूहे ले आए। दिन गुज़रते गए और चूहे बढ़ते गए। बढ़ते ही गए। और एक वक्त आया जब पूरा कस्बा चूहों से भर गया। अब करें क्या? कोई हल? इस कहानी में एक बाँसुरीवाले ने बँसी बजाकर चूहों को वश में कर लिया था। और छोड़ आया था दूर।

अगर तुम सोच रहे हो कि चूहे इतने क्यों बढ़े तो इसका एक गणित है: चूहे की औसत उमर 3-4 महीने होती है। 40 दिनों में एक चूहा वयस्क हो जाता है। और बच्चे देना शुरू कर देता है। एक चुहिया एक बार में 6 बच्चों को जन्म देती है। इस हिसाब से एक वयस्क चूहा और चुहिया एक साल में कितने हो जाएँगे? हिसाब लगाएँ ...

चुहिया पहली बार में 6 बच्चे देगी। 40 दिनों में ये वयस्क हो जाएँगे और बच्चे पैदा करना शुरू कर देंगे। यानी 40 दिनों के बाद हमारे पास तीन जोड़ी चूहे और हो गए जो बच्चे पैदा करेंगे। और पहले वाला एक जोड़ा तो है ही। इस तरह यह चक्र चलता रहेगा और एक साल में होंगे 1018 चूहे। अगर मैं कहूँ कि इस हिसाब से दो साल बाद 500000 से भी ज़्यादा चूहे हो जाएँगे तो क्या तुम मेरी बात मान जाओगे? नहीं न? ज़रा हिसाब लगा कर देखो।

चूहे इसी तरह से बढ़ते हैं।

इस कहानी के बारे में मैं कभी-कभी यह भी सोचता हूँ अगर कुछ चूहे बहरे हुए होंगे तब क्या हुआ होगा? सोचने वाली दूसरी बात यह है कि हमारे शहर, कस्बे, गाँव भी तो चूहों से खाली नहीं हैं। फिर क्यों हमारे यहाँ चूहों की बाढ़ नहीं आती?

इसका जवाब उन बातों में छुपा है जो हम पहले कर चुके हैं। ...शिकार और शिकारी वाले कुछ बॉक्स में...चूहों के भी दुश्मन हैं। एक के बारे में तो हमने बात की ही थी – उल्लू। कई और भी हैं। एक तो चूहे का नाम लेते ही याद आ जाता है – बिल्ली। धामन (रैट स्नेक) भी इसी कड़ी में आता है। इस साँप को तो किसानों का दोस्त ही इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह फसल के दुश्मन चूहों को खा जाता है। इस तरह यह चूहों की संख्या पर नियंत्रण रखता है। सोचो, अगर धामन चूहों को न खाता तो? तो शायद हमारा सारा अनाज चूहों के हिस्से में चला जाता। चूहों के दुश्मनों की सूची लम्बी है। कई बार भेड़िए भी चूहों को बिल खोदकर खा जाते हैं। इन पर ज़मीन से ही नहीं आसमान से भी हमला हो सकता है। ये बाज़ का भोजन बन सकते हैं और इन पर चील का भी झपट्टा पड़ सकता है। यानी कई शिकारी हैं जो चूहों की संख्या को काबू में रखते हैं।

एक जीव के कई शिकारी होना बहुत खास बात है। वह इसलिए क्योंकि अगर कोई एक शिकारी न रहा तो दूसरे शिकारी अपना काम करते रहें। और फिर सभी शिकारी किसी एक शिकार पर नहीं टिके रहते हैं। जैसे उल्लू की बात करें तो वह चूहे, मेढ़क, छिपकलियाँ सभी को खाता है। बिल्ली चूहों के अलावा कई चीज़ें खाती है। तुम जानते ही हो। पर, रैट स्नेक के बारे में क्या ख्याल है? रैट स्नेक की तो ज़िन्दगी ही चूहों पर टिकी है। यहाँ एक सवाल मन में आता है। तो फिर क्यों लोग साँप को देखते ही मार डालते हैं? चाहे वह रैट स्नेक जैसा बेज़हर साँप ही क्यों न हो! चक मक